जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

–सफ़दर हाश्मी

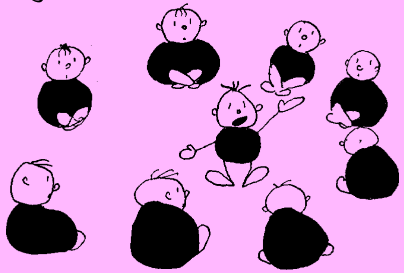

गुफाओं के दिनों से आजतक हमने काफी प्रगति की है। अनाज की पैदावार बढ़ी है, लोगों की सेहत बेहतर हुई है, और खुशहाली बढ़ी है। लेकिन हमने अपना लालच और स्वार्थ अभी तक नहीं छोड़ा है। आज दुनिया के आधे से ज़्यादा वैज्ञानिक हथियार और बम बनाने के काम में लगे हैं। दुनिया तीसरे महायुद्ध की कगार पर खड़ी है। दुनिया के सभी नेक और भले लोगों को इस जंग से बचने के लिए मिल-जुलकर शांति के लिए काम करना पड़ेगा।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्यः 12 रुपए   B-66   Price 12 Rupees

चलें, कुछ अच्छा करें

मनरो लीफ

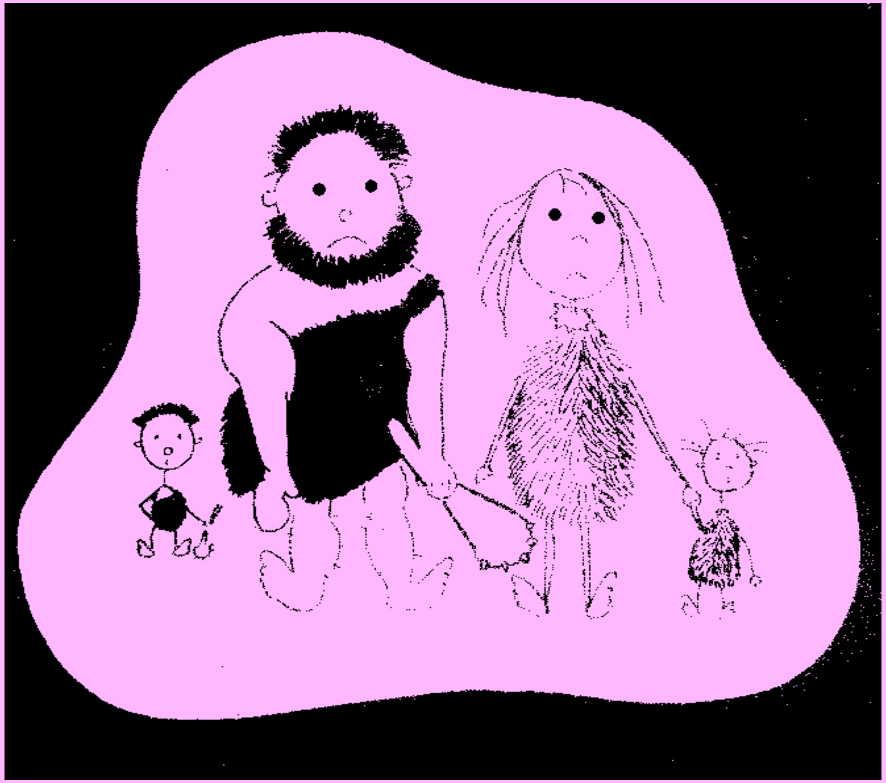

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

चलें, कुछ अच्छा करें: मनरो लीफ
अनुवादः अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2003, 2006

मूल्यः 12 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

चलें, कुछ अच्छा करें

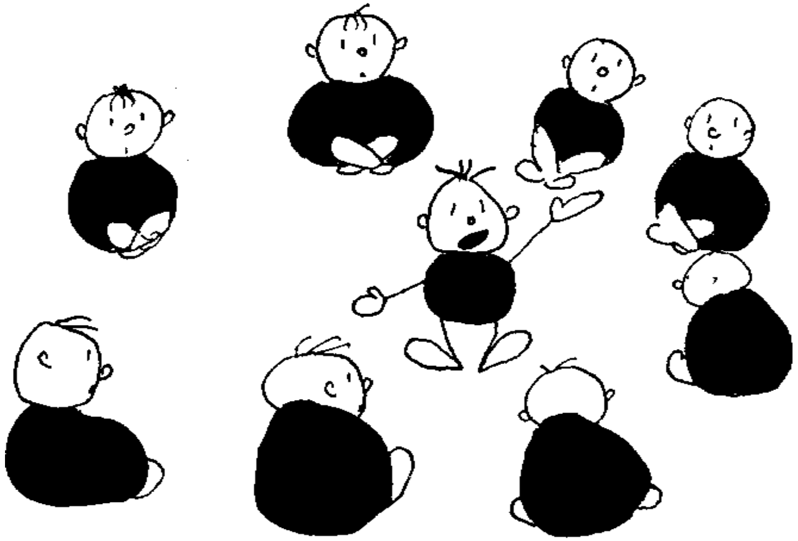

मनरो लीफ

हमारे पुरखे अंधेरी, सीलन वाली गुफाओं में रहते थे।

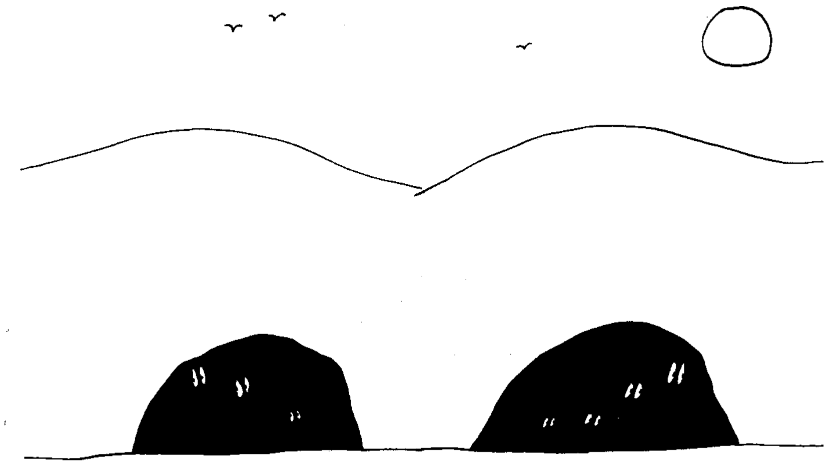

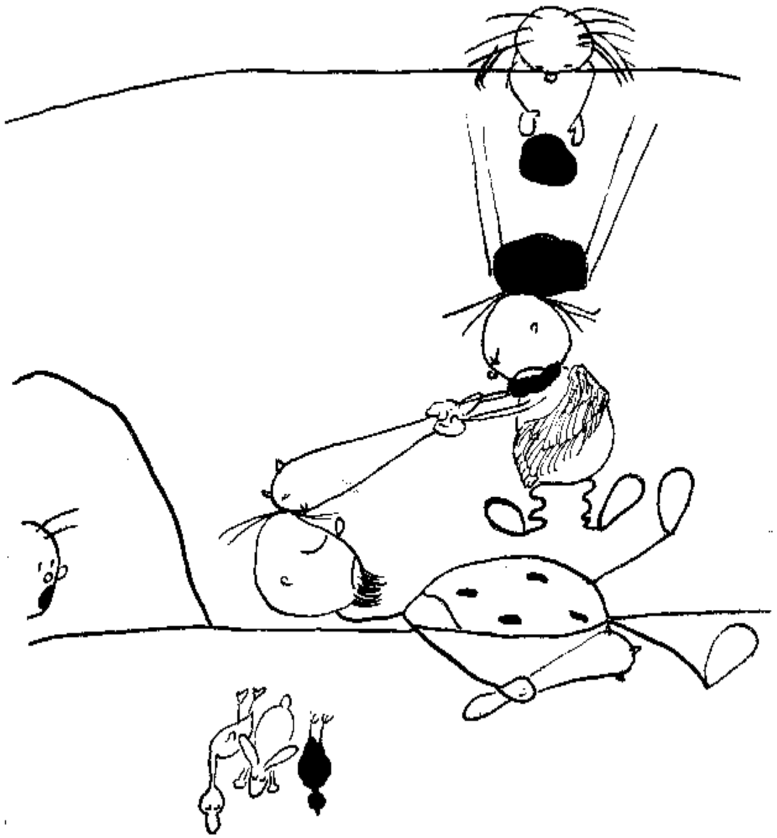

उस समय

वे

एक–दूसरे के साथ

काफी खराब तरीके से

पेश आते थे।

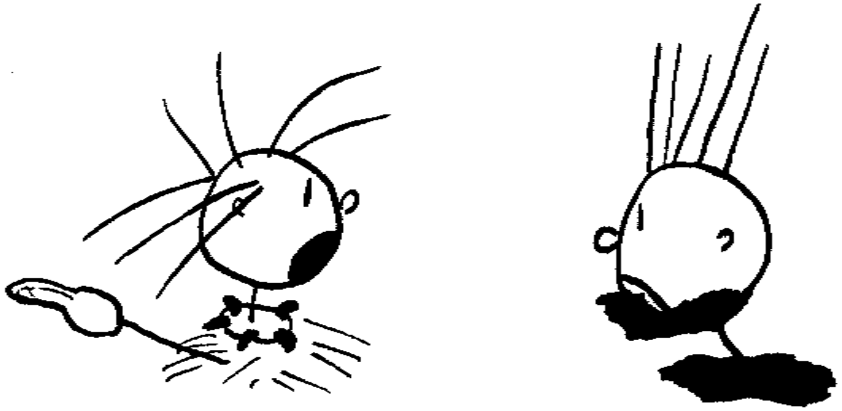

उस समय हरेक इंसान
एक-दूसरे से डरता था।

पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं मिलने से
लोगों को भूखा रहना पड़ता था।
घर और गर्म कपड़ों के अभाव में
लोगों को ठंड में ठिठुरना पड़ता था।
बहुत कम उम्र में ही
लोग बीमारियों से मर जाते थे।
उस समय लोग ज़िंदा रहने के लिए
केवल अपने हितों का ही ध्यान रखते थे।
उस समय ताकतवर और होशियार लोग,
कमज़ोर लोगों को मारकर
अपने रास्ते से हटा देते थे।

कुछ लोगों को
एक-दूसरे से
हमेशा डरे-डरे रहने की बात
ठीक नहीं लगी।

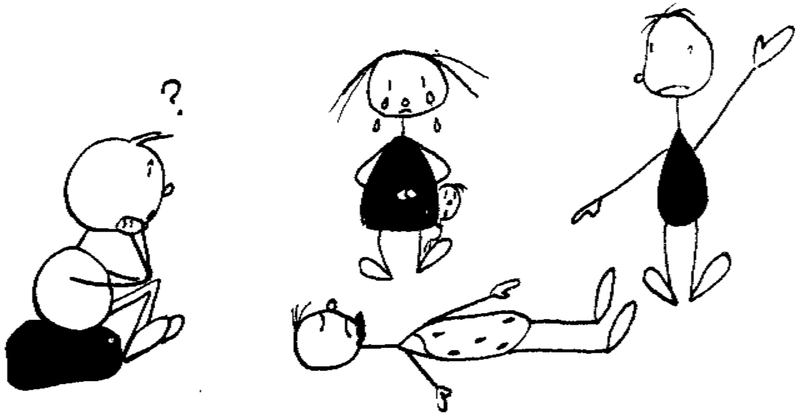

उनके दिमाग में
एक सरल विचार आया।
क्यों न कुछ लोग इकट्ठे मिलकर
अनाज उगाएं,
कपड़े बनाएं,
घर और मकान बनाएं
और उन्हें
बाकी लोगों के साथ बांटें।

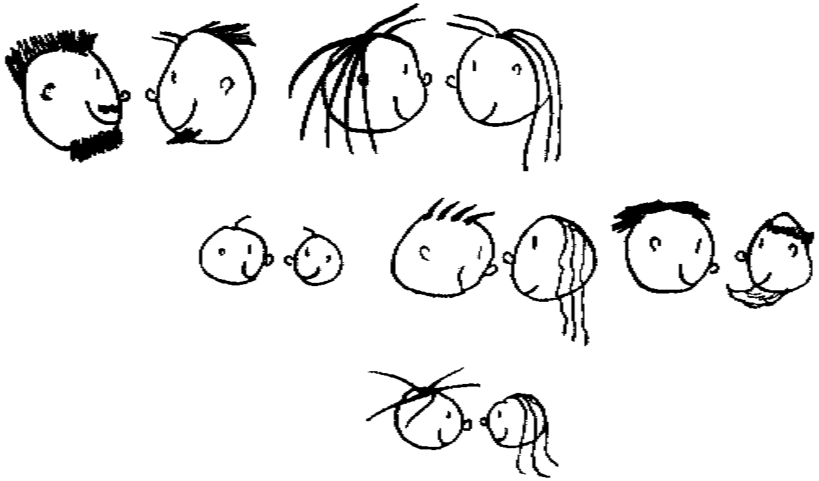

तब से लोग आपस में मिलकर
समूहों में, कबीलों में,
गांवों और कस्बों में रहने लगे।

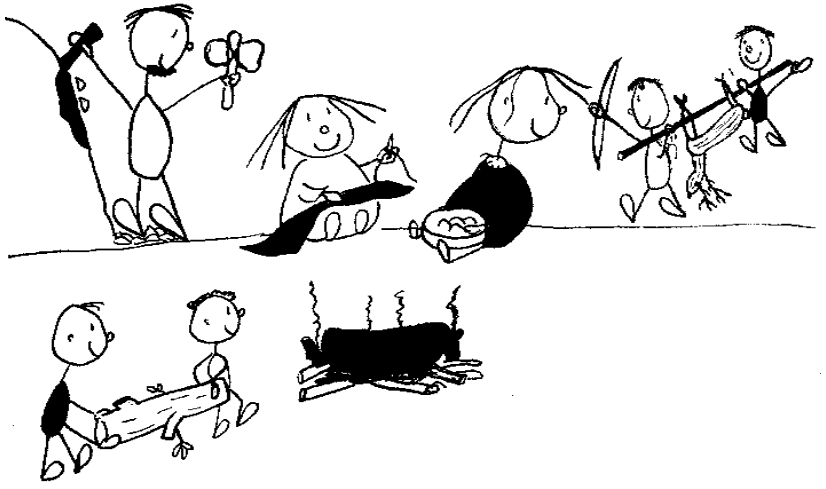

आपस में मिलजुल कर रहना
एक बड़ी समझदारी की बात थी।

हर इंसान किसी–न–किसी काम में कुशल होता था।
कोई मकान बनाने में बहुत होशियार होता
लेकिन शिकार करने में एकदम बेवकूफ।

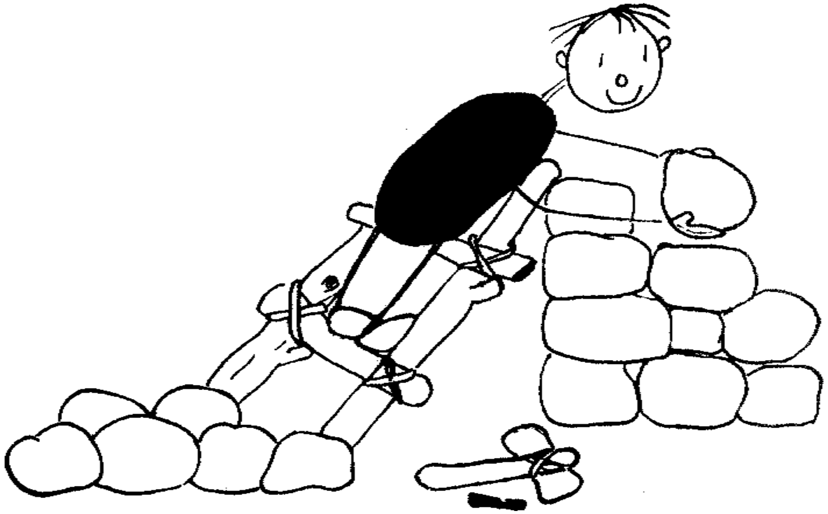

इसलिए
उससे मकान बनवाने में
और किसी अन्य इंसान से
शिकार करवाने में
ही समझदारी थी।
इसी में
सभी लोगों का भला था,
क्योंकि सभी लोगों को
भोजन और घर
चाहिए थे।

जैसे-जैसे कबीले बड़े हुए,
वैसे-वैसे लोगों ने
अलग-अलग धंधे अपनाए।
कुछ लोग फसल उगाने में
माहिर हो गए।

कुछ लोगों ने गायें,
बकरियां,
मुर्गियां और घोड़े पालने
का हुनर सीखा।
यह लोग किसान बने।

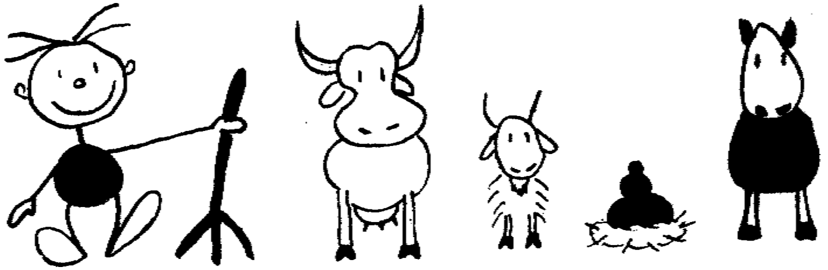

कुछ लोग
तीर–कमान,

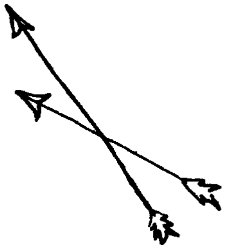

बर्तन,

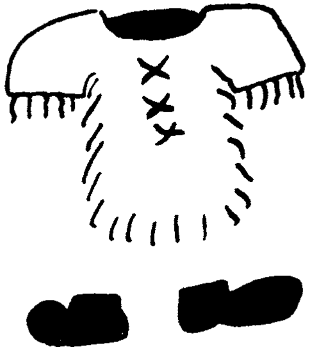

कपड़े
और कम्बल
आदि
बनाने में
कुशल
हो गए।

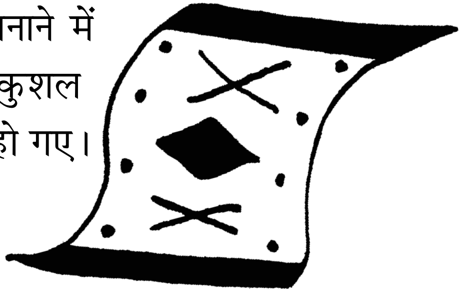

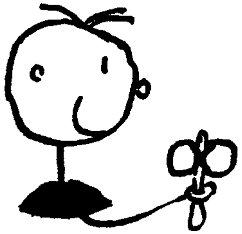

यह लोग कारीगर
और दस्तकार बने।

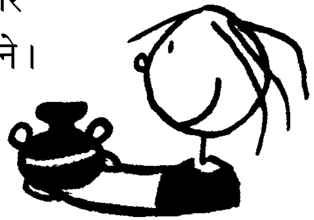

कुछ लोग नाव बनाने
और उन्हें चलाने
का काम सीख गए।

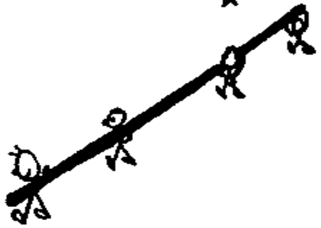

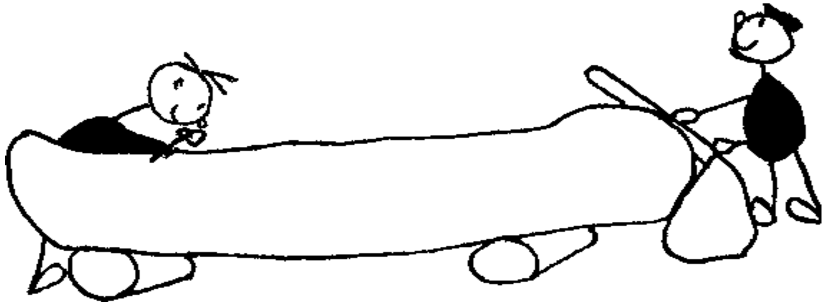

यह लोग जहाज निर्माता,
मल्लाह और नाविक बने।

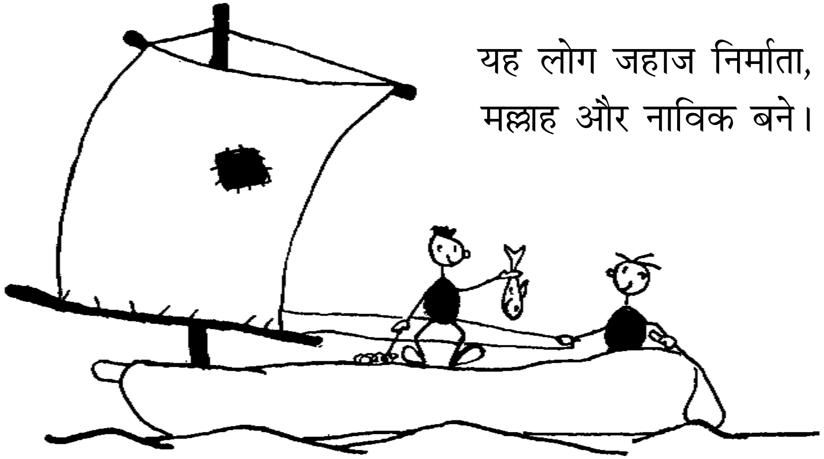

पर एक बात तय थी।
कबीले के हरेक बलवान,
लड़ाकू आदमी को योद्धा
ज़रूर बनना पड़ता था।

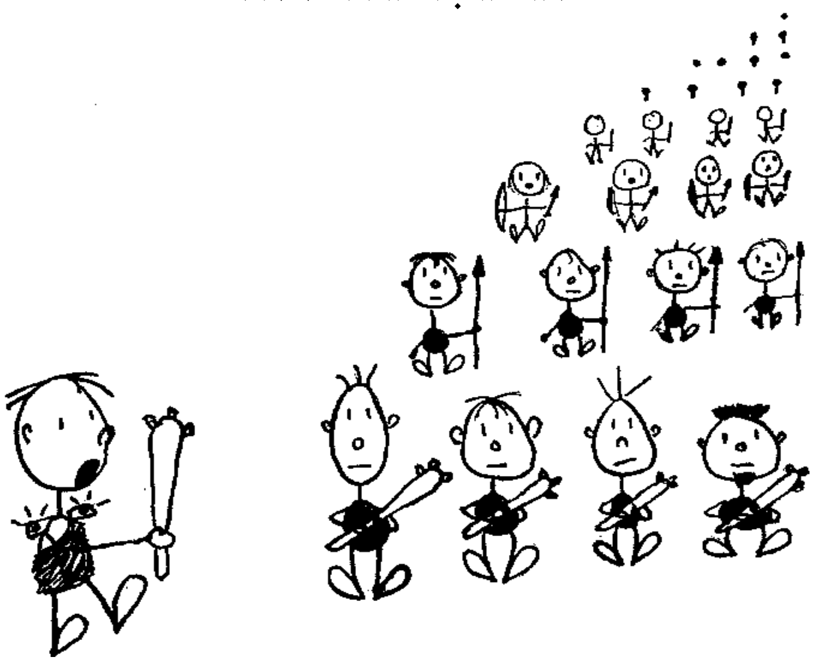

इसका कारण साफ़ था।

आसपास बहुत से अन्य कबीले भी थे।

अगर उनके पास पर्याप्त मात्रा में खाना,
कपड़े, घर आदि नहीं होते,
तो वे उन चीजों को आपके कबीले से
छीनने की कोशिश करते।

फिर इस बात पर झड़पें होतीं।
और अगर दोनों कबीले बड़े और शक्तिशाली होते
तो यह झड़प एक लम्बी लड़ाई में बदल जाती।

इस नासपीटी, बेहूदी,
लड़ाई को ही कहते हैं

युद्ध

इन लड़ाईयों में –
दुनिया की सभी जंगों में –
हमेशा लोग ही जख्मी होते हैं
और मरते हैं।

लड़ाई के दौरान नेक इंसानों के घर तोड़े जाते हैं
और लोगों की मेहनत की कमाई को लूटा जाता है।
युद्ध से आम लोगों को बहुत कष्ट पहुंचता है।
जंग से लोग बहुत दुखी होते हैं।

युद्ध में चाहें जीत किसी की हो,
परंतु दोनों ओर के आम आदमी ही मरते हैं
और जनता, जंग की तबाही में पिसती है।

अगर एक कबीला मारकाट का रास्ता छोड़कर,
अमन–चैन का रास्ता अपनाता,
तो भी अन्य कबीले उसे चैन नहीं लेने देते।
तब कोई अन्य खूंखार कबीला
उनपर आकर आक्रमण करता
और उन्हें तबाह कर डालता।
यानि उस समय नेकी और भलमनसाहत से
बिल्कुल भी काम नहीं चलता था।

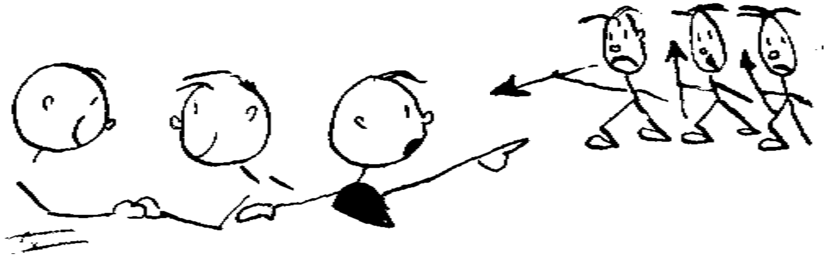

समझदारी और खुशहाली का तरीका
तभी सफल होता जब
सब लोग नेकी की बातें सोचते।
यह बात आज भी उतनी ही सच है
जितनी हमारे पुरखों के जमाने में थी।

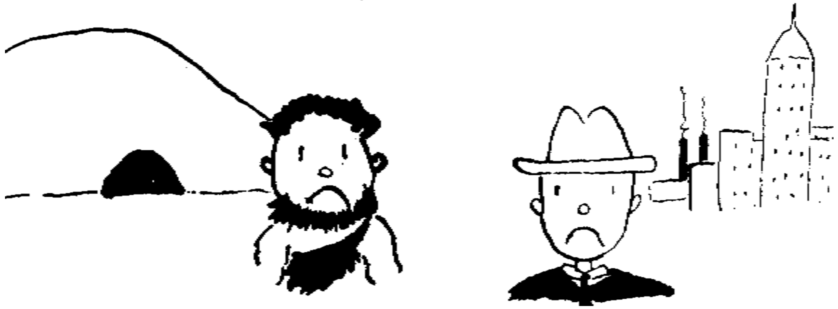

आदम युग से आजतक
चंद लोगों ने हमारे सोच और जीने
के तरीके को
सबसे अधिक प्रभावित किया है।
इन सोचने वालों को हम
चिंतक या
दार्शनिक
कहते हैं।

दार्शनिकों को तीन अलग-अलग
समूहों में बांटा जा सकता है।
इनमें से दो प्रकार के ***दार्शनिक***
हमारे बहुत काम आ सकते हैं।
परंतु तीसरे प्रकार के ***दार्शनिक***
हमें तमाम मुश्किलों और मुसीबतों
में डाल सकते हैं।

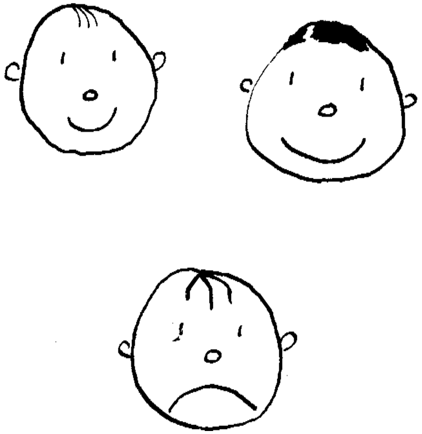

पहली किस्म के ***दार्शनिक***
सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।
इन्हें हम लीडर या नेता भी
कहते हैं।

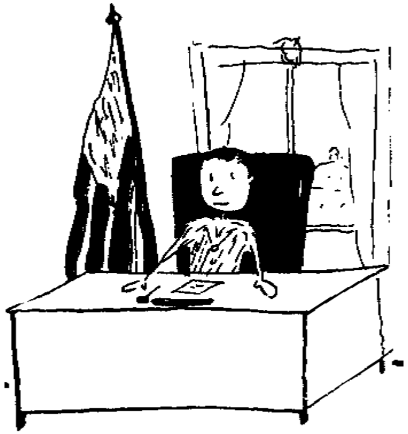

लीडर अक्सर काफी
ताकतवर होते हैं।
यहां ताकत का मतलब
शरीर और मांसपेशियों
की ताकत से नहीं है।
यहां ताकत का मतलब दिमागी ताकत से है।
लीडर, लोगों से अपनी बात मनवा सकते हैं।
लीडर अपने सोच के अनुसार अन्य लोगों से
काम करवाने की क्षमता रखते हैं।

अच्छे लीडर लोगों को हमेशा
एक-साथ मिलाने
और जनता की ज़िंदगी को
बेहतर बनाने की बात सोचते हैं।

वो चाहते हैं कि
लोग एक-दूसरे के साथ
अच्छा व्यवहार करें।
इसीलिए तो
सरकार और उसके तमाम
नियम-कानून बने हैं।

अलग-अलग कबीलों के लोग
अपने नेता या लीडर को
अलग-अलग तरीकों से चुनते थे।

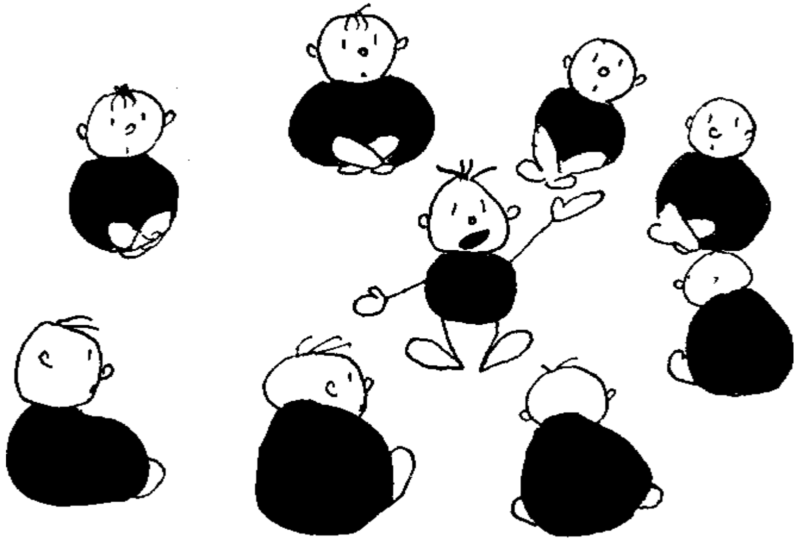

आज भी
कुछ-कुछ ऐसा ही होता है।
इसीलिए तो दुनिया
के तमाम लोग
अलग-अलग
देशों में बंटे हैं।

बहुत से देशों में
आम जनता से
अपने नेता को
चुनने के लिए कहा जाता हैं।
जो नेता
सबसे अधिक वोट पाता है,
वही लीडर चुना जाता है।

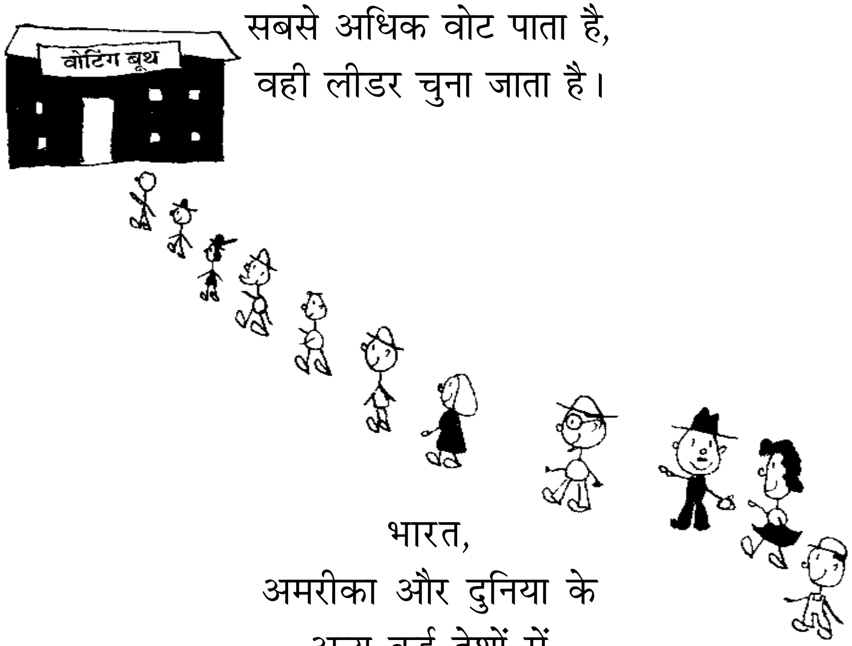

भारत,
अमरीका और दुनिया के
अन्य कई देशों में
लोगों को अपना लीडर
चुनने का अधिकार मिला है।
इसे 'जनता का राज'
या

प्रजातंत्र

कहते हैं।

कुछ अन्य देशों में
लीडर चुनने के लिए
बिल्कुल अलग तरीका
अपनाया जाता है।

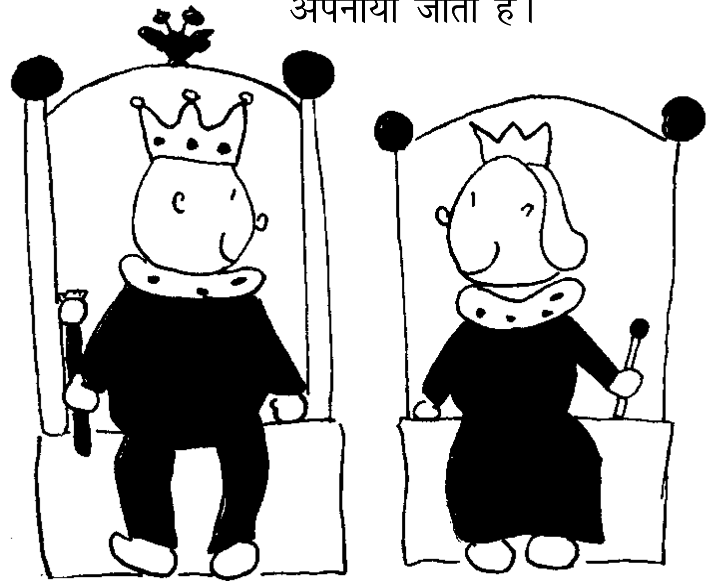

वहां एक ही परिवार के सदस्यों को
लीडर बनने का मौका मिलता है।
इन लीडरों को राजा या रानी कहा जाता है।

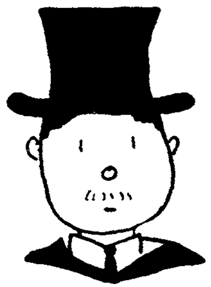

इन देशों में भी
लोगों से कुछ लीडर
चुनने को कहा जाता है।
ये लीडर, राजपाट चलाने में
राजा-रानी की
सहायता करते हैं।

कुछ अन्य देशों में
लोगों को अपना लीडर चुनने
का अधिकार नहीं होता है।
यहां पर देश के
किसी प्रमुख परिवार का सदस्य,
या देश का सबसे ताकतवर आदमी ही
लीडर बन जाता है।
कभी-कभी यह लीडर अच्छा निकलता है
और जनता की भलाई के लिए काम करता है।
परंतु कभी-कभी लीडर एकदम निकम्मा
और दुष्ट निकलता है
और उससे आम लोगों को
बहुत कष्ट होता है।

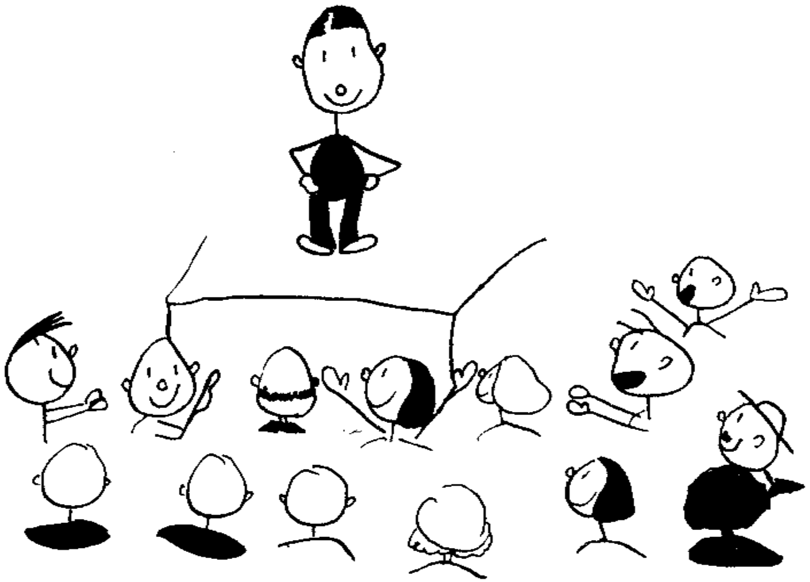

दुनिया का कोई भी देश
दावे के साथ यह नहीं कह सकता है कि
लीडर चुनने की उसकी प्रणाली सबसे अच्छी है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि
लीडर चाहें किसी भी प्रकार चुना जाए –
वो भला हो और जनता की अच्छाई के लिए काम करे।

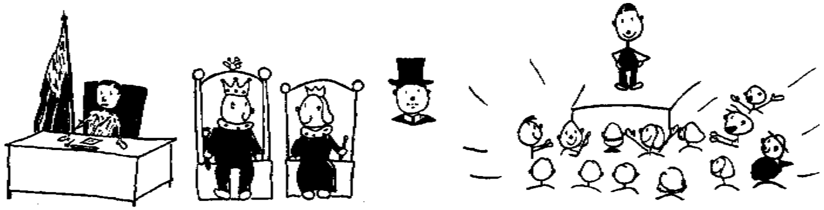

कुछ लीडर तो
पूरे देश पर राज करते हैं।
परंतु उनके अलावा कुछ अन्य सोचने वाले
चिंतक भी होते हैं
जिनसे कोई भी देश ताकतवर
या कमज़ोर बनता है।

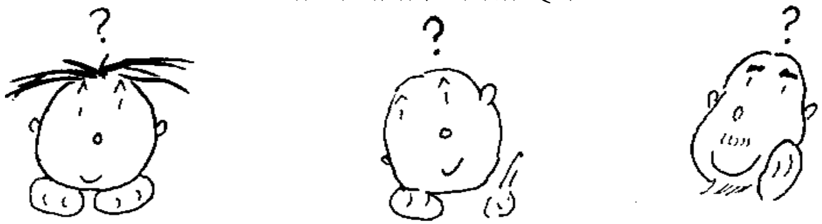

इन मेहनतकश लोगों को

कर्मयोगी

कहते हैं।

ऐसे चिंतक
दुनिया के हरेक देश में
पाए जाते हैं।
यह लोग हमेशा नई–नई चीज़ों के बारे में सोचते रहते हैं।

इन लोगों को हम
वैज्ञानिक,
आविष्कारक,
इंजीनियर,
डाक्टर,

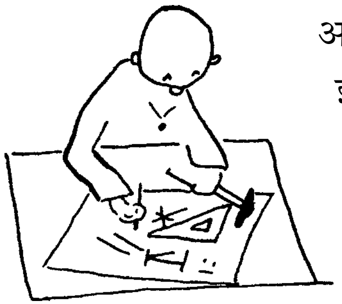

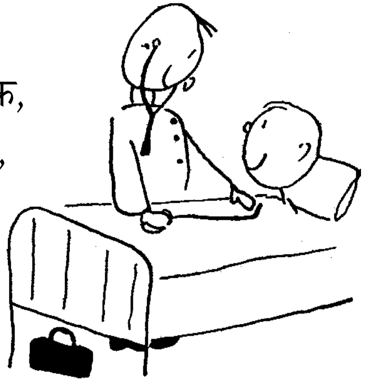

संगीतकार, चित्रकार, लेखक

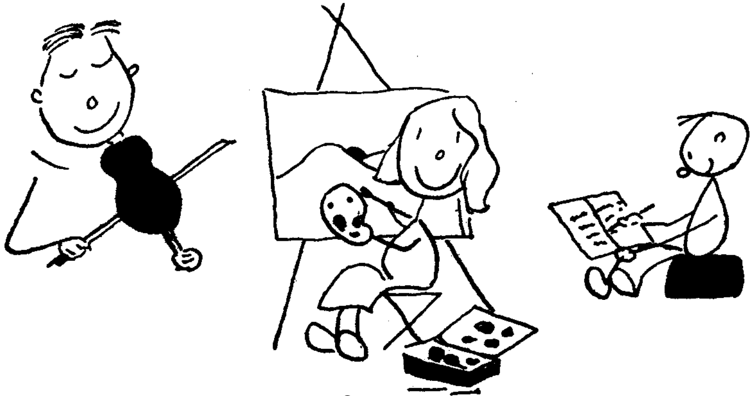

किसान,

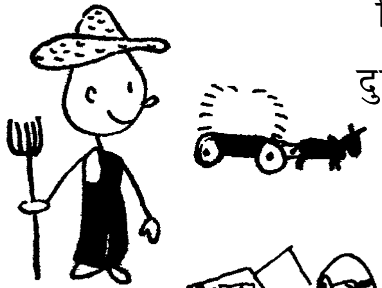

दुकानदार,

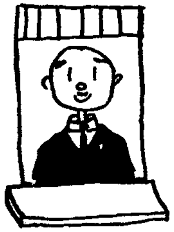

वकील, मजदूर,
राज-मिस्त्री,
बैंक कर्मचारी

और सैकड़ों अन्य नामों से जानते हैं। इन मेहनतकश लोगों के कारण ही देश प्रगति करता है और उनके सोच और चिंतन से हम सब लोगों का जीवन प्रभावित होता है।

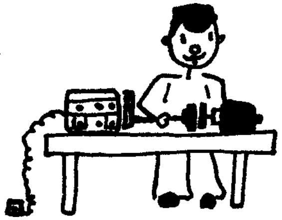

इन सोचने वाले लोगों में
कुछ को हम शिक्षक या टीचर बुलाते हैं।
ये शिक्षक अपने विवेक और हुनर को
अन्य लोगों को सिखाते हैं।

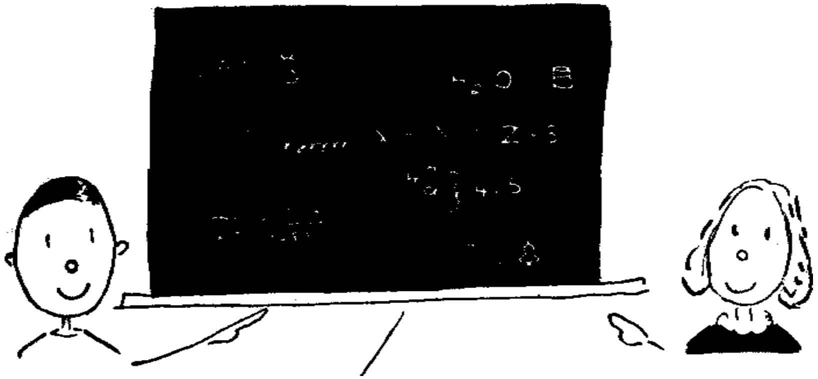

डाक्टर भी इन्हीं चिंतकों की श्रेणी में आते हैं।
डाक्टर, जीवाणुओं को मारने
और लोगों की सेहत अच्छी बनाने के नए तरीक सोचते हैं।
पूरी दुनिया ऐसे डाक्टरों का स्वागत करती है।

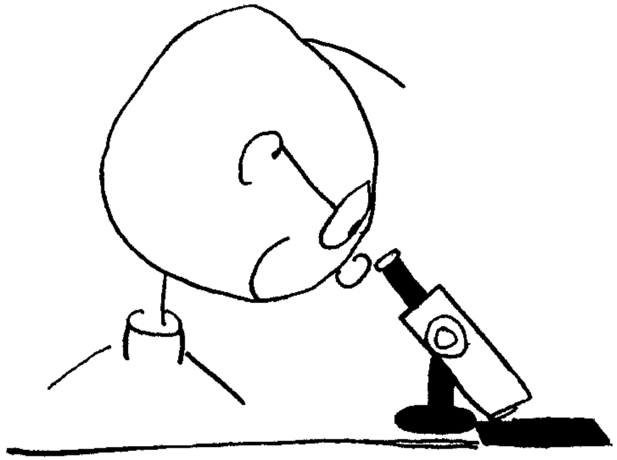

कुछ लोग गायों से अधिक दूध,
मुर्गियों से ज़्यादा अंडे,
ज़मीन से अधिक मक्का, गेहूं और धान
उगाने का प्रयास करते हैं।
इन लोगों के शोध से हमें बहुत लाभ मिलता है।

कुछ लोग
कोयले को
खोदने के सरल
उपाय खोजते हैं।

कुछ लोग हवाईजहाज उड़ाते हैं
तो कुछ हमें गर्मी में ठंडा
और सर्दी में गर्म रखते हैं।

जो लोग इस तरह की
नई-नई बातों के बारे में सोचते हैं,
उनका देश
छोटा हो या बड़ा,
वे उसे महान बनाते हैं।
यह तभी संभव होता है
जब इन देशों में समझदार
और भले लीडर हों।

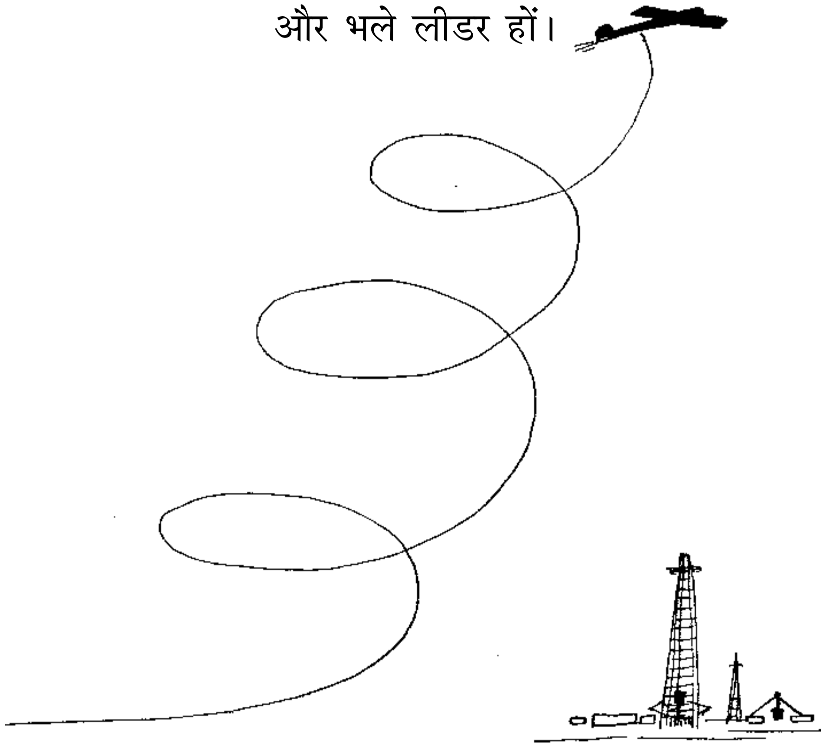

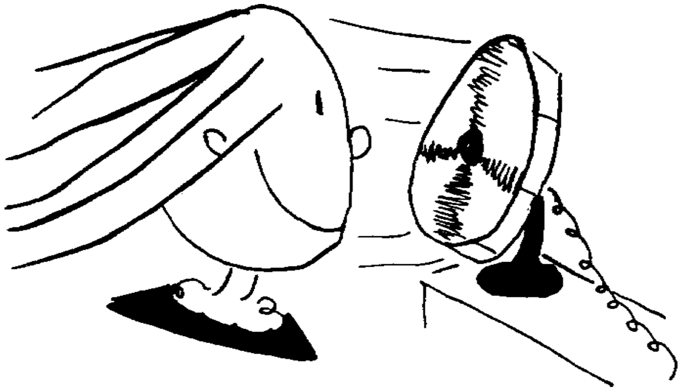

जिस देश में
जितने अधिक भले लीडर होंगे,
जो लोगों को अच्छी बातें सिखाएंगे,
वो देश उतना ही
खुशहाल बनेगा
और वहां हरेक इंसान का
जीवन स्तर
ऊपर उठेगा।

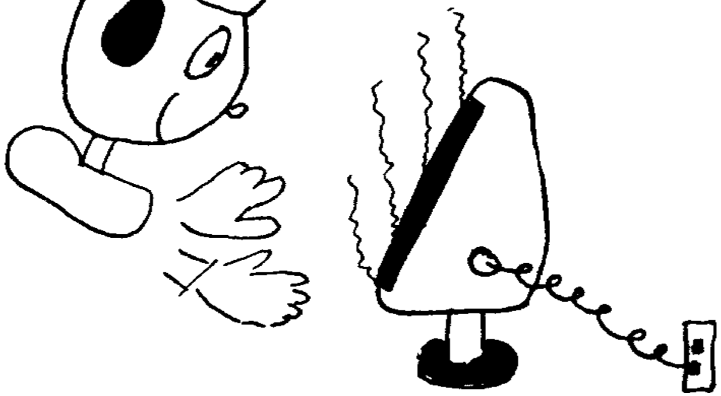

यहां तक तो बात समझ में आती है।
परंतु वे कौन से लीडर हैं
जो हमें मुसीबत में डालते हैं?
यह तीसरे प्रकार के लीडर कौन हैं,
जो हम सबके जीवन को नरक बनाते हैं?

?

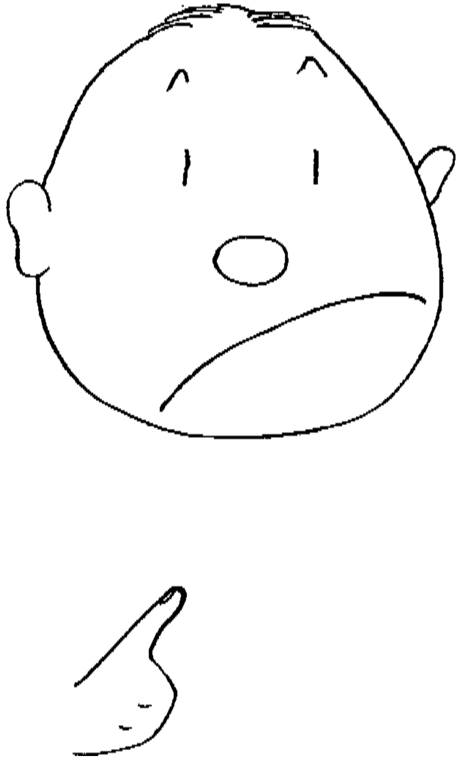

यह
लालची
और बेईमान लोग हैं।
ये लोग हर जनहित के काम को खराब करते हैं।
ये अपने स्वार्थ के लिए पूरी दुनिया को लूटते हैं।
इस प्रकार के स्वार्थी,
लालची और बेईमान लोग भी
हरेक देश में रहते हैं।

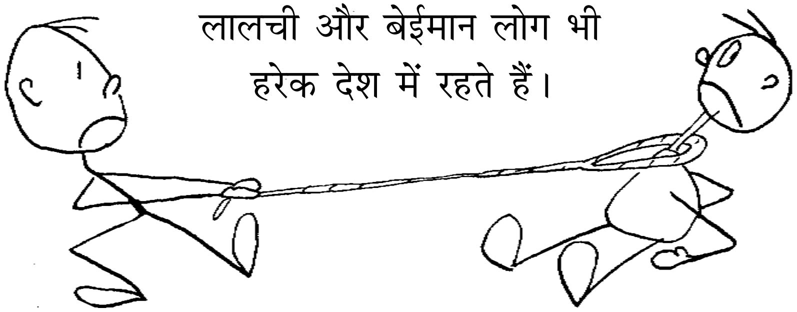

कुछ लोग अमीर होते हैं,
तो कुछ लोग गरीब।
कुछ ताकतवर होते हैं,
तो कुछ कमज़ोर।

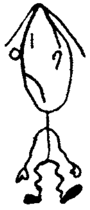

कुछ बूढ़े,
तो कुछ नौजवान।

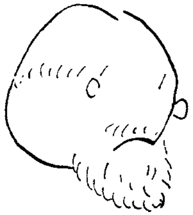

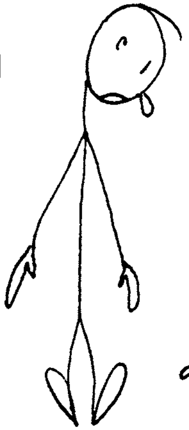

कुछ ऊँचे,
तो कुछ छोटे।

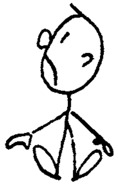

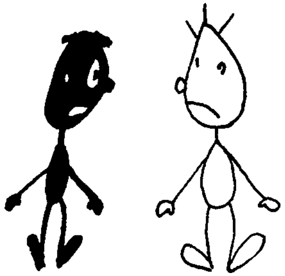

कुछ लोग
काले होते हैं,
तो कुछ गोरे।

कुछ
मोटे होते हैं,
तो कुछ पतले।

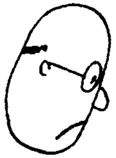

कुछ
होशियार होते हैं,
तो कुछ मूर्ख।
ये सब-के-सब लोग देखने में
आम इंसानों जैसे ही लगते हैं।
परंतु ये लोग हमें
और सारी दुनिया को नुकसान पहुंचाते हैं।

ये लोग

स्वार्थी और **लालची**

होते हैं।

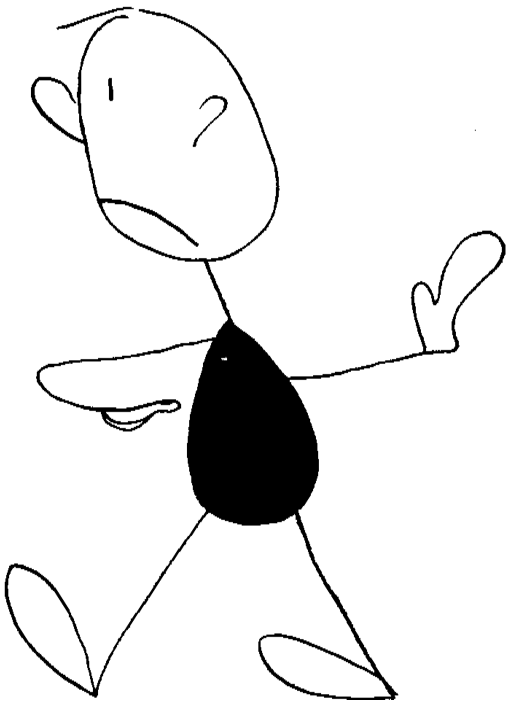

अगर इनका बस चले तो वे
अन्य लोगों से अपने स्वार्थ के लिए भरपूर मेहनत कराएं।
ये लोग दूसरों के कष्टों की
बिल्कुल भी परवाह नहीं करते हैं।
इन्हें सिर्फ अपने हितों का ख्याल होता है।
ये स्वार्थी लोग अपनी ही मनमानी से काम चलाना चाहते हैं।

कुछ स्वार्थी लोग केवल
अपने परिवार के सदस्यों को ही परेशान करते हैं।
इसलिए परिवार से बाहर के लोग
उनके बारे में नहीं जानते हैं।

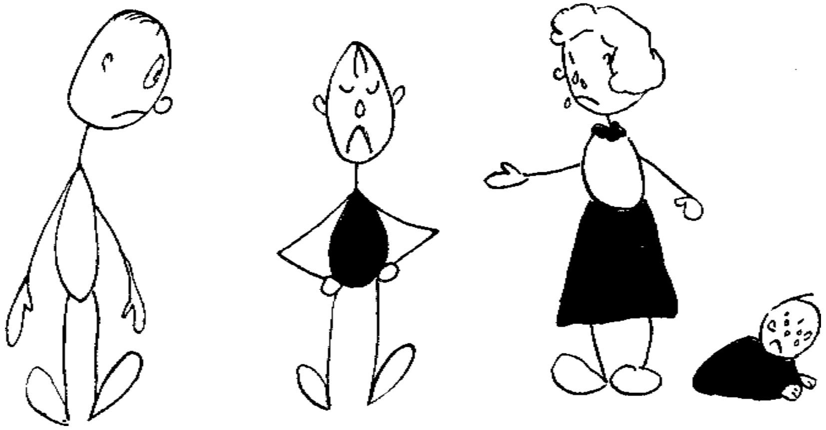

कई स्वार्थी लोग, जनता को धोखा देकर
धीरे-धीरे करके बहुत ताकतवर बन जाते हैं।
लीडर बनने पर यह लोग बहुत खराब काम करते हैं।
वो लोगों को परेशान करते हैं और कष्ट पहुंचाते हैं।
ये लोग, कभी-कभी पूरे देश के लोगों को,
और कभी पूरी दुनिया के लोगों की नाक में दम करते हैं।

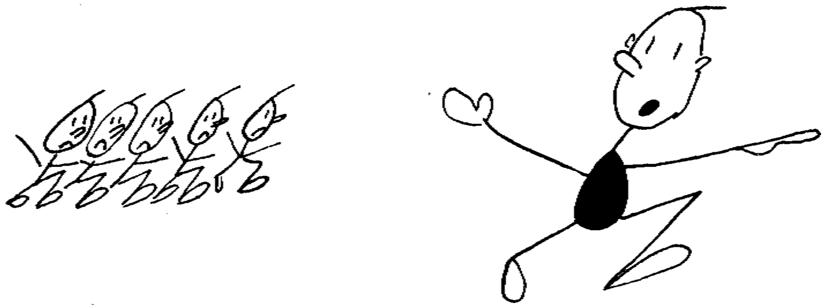

स्वार्थी लीडर,
कर्मयोगियों, वैज्ञानिकों आदि से
ऐसे नए-नए बम
और हथियार बनाने को कहते हैं,
जिससे अन्य लोगों को
फायदे की बजाए नुकसान हो।

ऐसी हालत में दुनिया के नेक और भले
लोगों को भी गलत काम करने के लिए
मज़बूर होना पड़ता है।

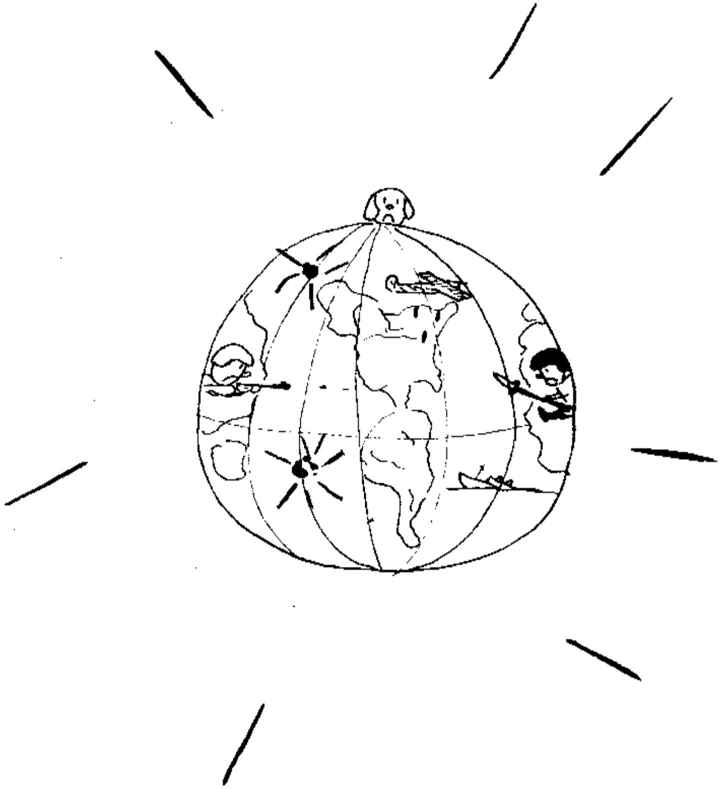

तब हमारे सामने भी
वही प्रश्न खड़ा होता है
जो हज़ारों साल पहले हमारे पुरखों के सामने था।

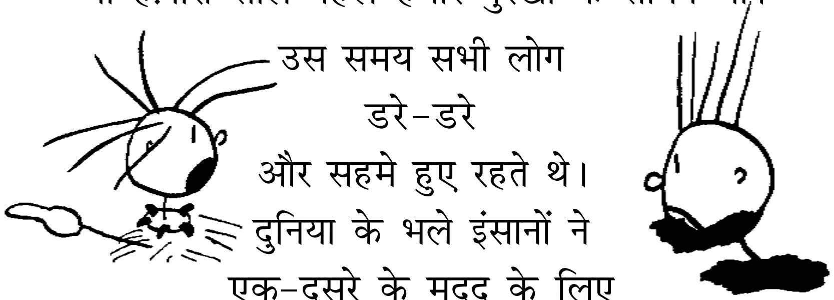

उस समय सभी लोग
डरे-डरे
और सहमे हुए रहते थे।
दुनिया के भले इंसानों ने
एक-दूसरे के मदद के लिए
जो भी नेक काम किए हैं, जो महान शहर बसाये हैं,
जो आविष्कार किए हैं, दवाईयां बनाई हैं,
हमारे खेत-खलिहान, स्कूल, कारखाने, रेडियो,
रेलगाड़ियां, मोटरकारें, टेलीफोन और हवाईजहाज़ों के
बावजूद हम उस डर को नहीं भूल पाते हैं
जो दुनिया के लाखों-करोड़ों लोगों को दुखी करता है।

हम उन युद्धों को लड़ने के लिए मज़बूर होते हैं
जिन्हें दुनिया के लोग लड़ना नहीं चाहते।

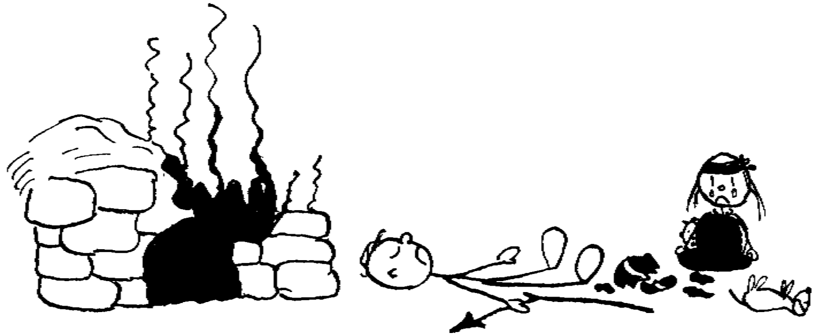

दुनिया में हरेक देश के
लोग अपने लीडरों को
सावधानी से चुने और
ये पक्का करें कि कोई भी
स्वार्थी
और लालची व्यक्ति
ताकतवर लीडर न बन पाए।
अगर ऐसा होगा
तभी हमलोग इस दुनिया में
शांति से रह पाएंगे।

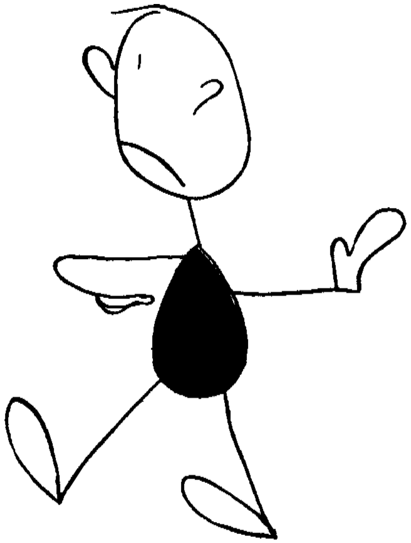

सभी दार्शनिक और चिंतक, मेहनतकश और कर्मयोगी,
लालची और स्वार्थी लोग, पुरुष और महिलाएं
बनने से पहले, छोटे लड़के और लड़कियां होते हैं।

हम बचपन में जो कुछ भी करते हैं और सोचते हैं
वह बहुत महत्वपूर्ण होता है।
बड़े होने पर भी
इसका पूरा प्रभाव
हम पर बना रहता है।

अगर हम इस दुनिया को
एक बेहतर जगह बनाना चाहते हैं
तो हम सब लोगों को मिलकर
इसके लिए काम करना होगा।

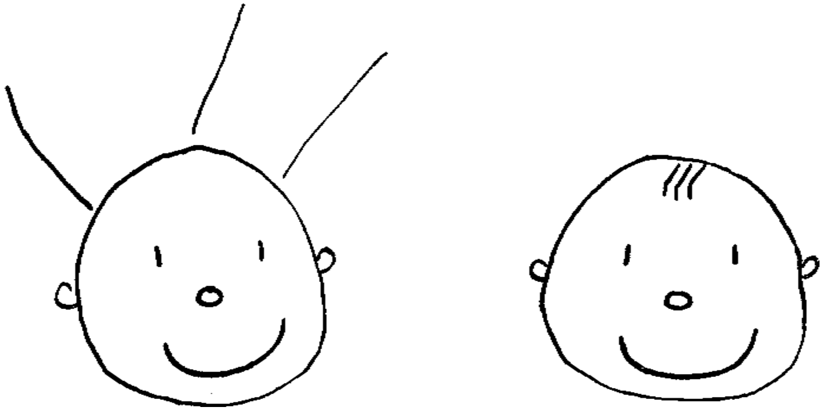

हज़ारों-लाखों साल बीत चुके हैं
लेकिन अभी भी हमारे पुरखों ने
मिलजुल कर रहना नहीं सीखा है।
अभी भी दुनिया भर में
लोगों को एक-दूसरे से
डर लगता है।

बहुत से देशों में आज भी
लोग भय के साये में जीते हैं।

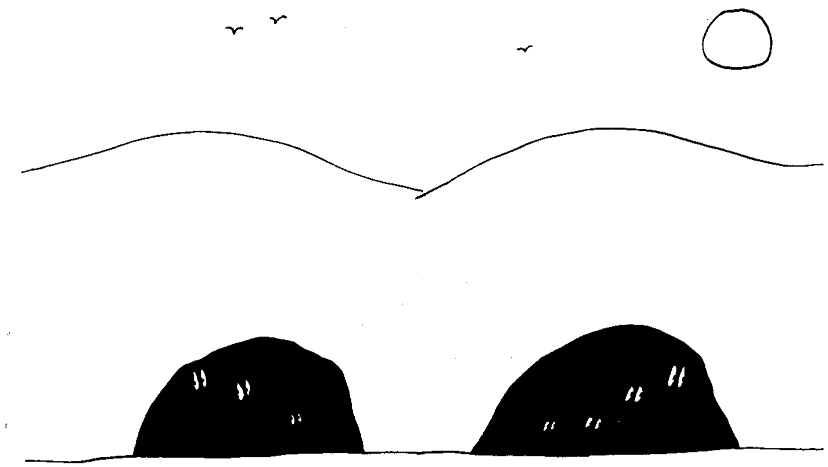

बम और बंदूकों, मिसाइल और मशीनगनों
का डर उन्हें अपनी ज़िंदगी बचाने के लिए
एक बार फिर उन्हें काली-स्याह,
सीलन भरी गुफाओं में भेज सकता है।
हममें से किसी के साथ भी ऐसा हो सकता है।
ज़िंदगी जीने का यह एक बेहद बेवकूफ तरीका होगा
इसलिए
हम सारी दुनिया के लोग मिलकर सोचें,
चिंतन करें और
ताकतवर, दयालु
बनकर दुनिया में नेक और भले काम करें।
आईए

चलें, कुछ अच्छा करें।